अध्याय 6

जीवन परिचय

मीरा बाई

भक्ति युग के सन्त कवियों में मेवाड़ के राणा वंश की मीराबाई का नाम इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है।राजस्थान की प्रेमदीवानी मीराबाई ने अपनी गीतिमई वाणी के द्वारा भारत के जन मानस में प्रभु भक्ति का प्रकाश फैलाया, जिसे आज तक "मीरा के भजनों के रूप में हम विभिन्न संगीतज्ञों द्वारा श्रवण करके आनन्द विभोर होते रहते हैं।

मीराँ का जन्म राजस्थान की जोधपुर रियासत में मेड़ता अन्तर्गत कुड़की नामक गांव में राठौड़ वंश में विक्रम संवत् 1559 में हुआ। मीराबाई रजत सिंह की इकलौती सन्तान थी। माता का नाम वीर कुँवरी था। मीराँ का विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के ज्येष्ट पुत्र भोजराज से सम्वत् 1573 में कर दिया गया। किन्तु ये तो गिरधर नागर को अपना पति मान बैठी थी। वह तो कृष्ण भक्ति में ही तल्लीन रहती थी। विवाह के पश्चात् मीराँबाई चित्तौड़ में रहने लगी। कुछ समय बाद युवराज भोजराज की मृत्यु हो गई तब तो मीराँ की कृकृष्ण भक्ति और भी बढ़ गई। उनका पूरा समय भगवान के भजन गाने और साधु सन्तों की संगति में बीतने लगा। यह गाना बजाना साधु संगत मेवाड़ के महाराजा विक्रमजीत सिंह (मीराँ बाई के देवर) को अच्छा नहीं लगता। राजवंश के अन्य लोग भी मीराँ के विरूद्ध हो गये मीराँ को हर प्रकार से रोका गया, समझाया गया, डराया गया, अनेक यातनाएँ भी दी गई, यहाँ तक की विष का प्याला तक उन्हें दिया गया किन्तु मीराँ की कृष्ण भक्ति बढ़ती गई वह मन्दिरों में जाकर पैरों में घूँघरू बांध और हाथ में इकतारा और करताल लेकर "मैं तो गिरधर आगे नाचूँगी" गाते हुए नाचने लगी, नाचते–नाचते वे तन्मय होकर बेसुध हो जाती और फिर नाचने लगती।

कुछ समय बाद अपने ससुराल और मैके को छोड़कर मीराँबाई भगवान कृकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा चली आई, और मथुरा वृन्दावन के मन्दिरों में ही भगवान के आगे 'म्हाने चाकर राखो जी' गाते हुए प्रभु की चाकरी करने लगी। इस प्रकार बहुत समय तक बजृभूमि में गिरधर नागर के गुणगान करती रही इनके संगीत का बृजवासियों पर विशेष प्रभाव पड़ा। यही कारण है कि अब तक मीराँ भजनों का जितना प्रचार उत्तर प्रदेश और बृजभूमि में है, उतना अन्यत्र नहीं है। कुछ समय पश्चात् मीराबाई बृजभूमि को छोड़कर द्वारिका जी चली गई और वहाँ रणछोड़ जी के मन्दिर में प्रभु गुणगान में लीन रहने लगी।

मीराँ बाई की ख्याति देश भर में फैल चुकी थी अतः घर वालों को अपनी भूल का एहसास हुआ। उन्होंने अपने यहाँ के ब्राह्मणों को आदेश दिया कि किसी भी प्रकार से समझा बुझाकर मीराँ को सम्मान के साथ यहाँ ले आओ, लेकिन मीराँ अपने भगवान का दरबार छोड़कर जाने को सहमत नहीं हुई। कहा जाता है कि जब ब्राह्मणों ने चलने के लिए विशेष आग्रह किया तो वे मन्दिर में भीतर यह कहकर चली गई कि मैं भगवान से आज्ञा ले आऊँ, और वहीं प्रभुमूर्ति में विलीन हो गई। यह घटना

1630 (ई सन् 1573) के आसपास की मानी जाती है।

मीराँ बाई परम कृष्ण भक्त कवियित्री होने के साथ–साथ उच्च कोटि की गायिका और सफल संगीतज्ञ भी थी। उन्होंने असंख्य भजनों की रचना की। मीराँ के रचे हुए प्रभु भक्ति के पद अनेक रागों और तालों में बंधे हुए मिलते है। मीराँ की मल्लार प्रसिद्ध है इसकी रचियता स्वयं मीराँ बाई थी।

वास्तव में प्रभु भक्ति की पीर ने ही उन्हें कवियित्री और गायिका बना दिया था। कृकृष्ण प्रेम में उनकी संगीत धारा पदों और भजनों के रूप में राजस्थान के रेगिस्तान से फूटकर भारत के जन मानस को आप्लावित करती हुई आज तक प्रवाहित हो रही है।

महाराणा कुम्भा

पिता का नाम :– महाराणा मोकल के जयेष्ठ पुत्र कुम्भकर्ण (कुम्भा)

माता का नाम :– सौभाग्य देवी

संगीत गुरू :– "राजश्रित कवि संगीतज्ञ" कन्हव्यास

महाराणा कुम्भा के जन्म के संदर्भ में कहा जाता है कि कुम्भा का जन्म दीर्घकालीन गर्भावस्था के उपरान्त हुआ। शौर्य व साहित्य के प्रतीक व्यक्ति महाराणा कुम्भा परम विद्यानुरागी नरेश होने के साथ ही स्वयं महान साहित्यकार एवं संगीतकार भी थे। विदेशी आक्रमणों के संक्रमण काल में भारतीय शास्त्रीय संगीत के सिद्धान्तों को संगीतराज ग्रन्थ में संजो कर विलुप्त होने से बचाना महाराणा कुम्भा की भारतीय शास्त्रीय संगीत को अमर देन है।

संगीतराज ग्रन्थ संगीतमर्मज्ञ महाराणा कुम्भा के संगीत शास्त्रीय तलस्पर्शी गहन ज्ञान का परिचायक ग्रंथ है। संगीत के क्षेत्र में महाराणा कुम्भा की अक्षयकीर्त्ति को मुख्य आधार ग्रंथ संगीतराज का माना जाता है। संगीत के अपूर्व साधक और सर्जक महाराणा कुम्भा द्वारा रचित "संगीत राज ग्रन्थ" भारतीय संगीत का एक प्रौढ़तम आधारग्रंथ हैं। इस ग्रन्थ में लेखक ने श्रुति, स्वर, सप्त, ग्राम मूर्च्छना एवं जाति गायन से लेकर प्रबन्ध गायन तक के विशद विषय को व्यापक धरातल पर प्रस्तुत किया है। कुम्भा ने जातिगायन के महत्त्व को भी स्वीकार करते हुए कहा कि सभी मनुष्यों द्वारा जो कुछ भी गाया जाता है वह जाति में निहित है।

गीत रत्न कोष में तान के संदर्भ में कुम्भा का कथन है कि तान को तानना अर्थात् विस्तार के अर्थ में समझना चाहिए। कुम्भा के अनुसार "विकृत स्वरों (अन्तर–काकली) का लोप तानों में समाहित नहीं है। कुम्भा ने संगीत की स्तुति के द्वारा संगीत के महत्त्व को उजागर करते हुए कहा है – "जीव और परमात्मा" में जो ऐक्य स्थापित करने में समर्थ है जो सभी प्राणियों को सम्मोहित करने की शक्ति रखता है। ऐसे गीत (गायन) की हम स्तुति करते हैं।

कुम्भा के शासनकाल में संगीत साहित्य, शिल्प, स्थापत्य, धर्म, मीमांसा, कामशास्त्र आदि विविध विषयों में साहित्य सर्जना हुई किन्तु कुम्भा के राजश्रय में रची गई लगभग सभी रचनाओं में संगीत प्रेमी कुम्भा की संगीत विषयक भावनाओं को अल्प अथवा बहुत्व रूप से स्थान अवश्य मिला।

निःसंदेह महाराणा कुम्भा के राज्याश्रय में सृजित इन उच्च कोटि के विद्वानों की तियाँ शताब्दी तक इन्हें अमर रखेगी और अमर रहेगा कुम्भा का संगीत अनुराग और महाराणा का कलाप्रेमी व्यक्तित्व जो इन विद्वानों को महत्त्व एवं सम्मान देता था।

उ. अल्लादिया खाँ

अल्लादिया खाँ महाराष्ट्र के विख्यात गायक हुए। आपका जन्म 1855 ई में हुआ। अल्लादिया खाँ ने अपने पिता उस्ताद जहाँगीर खाँ से संगीत की तालीम ली थी। आपके पिता श्री भी उच्चकोटि के संगीतज्ञ हुए थे।

कोल्हापुर के छत्रपति साहू महाराज ने अल्लादिया खाँ को अपना दरबारी संगीतज्ञ नियुक्त किया था। आपकी गायकी कष्टसाध्य थी। कठिन रागों के गायन में आप प्रवीण थे। आपके घराने की गायकी प्राप्त करने में आपके शिष्यों को बड़ी तपस्या करनी पड़ती थी।

आपके शिष्य समस्त महाराष्ट्र में फैले हुए हैं। जिनमें गायनाचार्य भास्कर बुआ, श्रीमती केसरबाई केरकर, श्री गोविन्द राव टैम्बे तथा भुर्जी खाँ, गंगूवाई हंगल, मोधूबाई कुर्डीकर जैसे प्रख्यात गायक कलाकार हुए हैं। अल्लादिया खाँ साहब मुश्किल और अप्रसिद्ध राग गाने में सिद्ध थे।

आप अपनी गायकी में स्वर कम्पन्न, मीड, गमक, हरकत के साथ–साथ आलाप की गम्भीरता पर विशेष ध्यान देते थे। पतली आवाज से तार और अतितार सप्तक के स्वरों में काम दिखाने की विशेषता आपके अन्दर विद्यमान थी।आपके घराने की गायकी में विशेष रूप से ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराने, होली आदि गीत प्रकार ही विशेष रूप से पाये जाते हैं। ठुमरी तथा गजल आपके घराने में नहीं के बराबर है।

भुर्जी खाँ (पुत्र) अल्लादिया खाँ अजीजुद्दीन(पौत्र)

स्व. अल्लादिया खाँ साहब जयपुर घराने के माने हुए कलाकार रहे हैं। आप ध्रुपद की डागुर बानी के वंशज थे विलम्बित एवं गमक युक्त आलापी, वक्र या बलपेच युक्त तानें, मुखबन्दी तानें, नई बन्दिशें और अप्रचलित रागों का गायन इस घराने की विशेषता है। ख्याल गायकी में यह घराना विलंबित तीन ताल को अधिक पसन्द करता है। धीमी आलापों में टप्पे जैसी छोटी–छोटी परन्तु द्रुतलय की मुरकिया एवं तानें ली जाती है।खाँ साहब का निधन 16 मार्च 1946 में कोल्हापुर में ही हुआ।

कुमार गंधर्व

विख्यात गायक कलाकार कुमार गन्धर्व का जन्म 8 अप्रैल 1924 को बेलगाँव जिले के सुलेयावी ग्राम में एक लिंगायत परिवार में हुआ। इनका मूल नाम शिवपुत्र था। (पूरा नाम शिवपुत्र सिद्धरमैया कोमकलि था) उनके पिता सिद्धराम स्वामी एक अति गुणी संगीतज्ञ एवं उनके प्रथम संगीत गुरू थे। बाद में वे डा. बी. आर. देवधर के शिष्य बनें। ख्याल के साथ वे भजन, गजल, लोकगीत आदि में भी अत्यन्त दक्ष थे।

पांच वर्ष की उम्र में एक दिन अचानक कुमार की प्रतिभा दृष्टिगोचर हुई। कुमार सवाई गन्धर्व केएक गायन जलसे में गये थे। वहाँ से लौटकर घर आये तो सवाई गन्धर्व द्वारा गाई गई बसन्त राग की बन्दिश तान–आलापों के साथ ज्यों की त्यों नकल करके गाने लगे। यह देखकर इनके पिताजी व अन्य लोग आश्चर्य चकित रह गये। कुमार में पूर्व जन्म के संगीत संस्कार हैं ऐसा लोगों ने कहा। अतः कुमार की संगीत भावना को बल देने के लिए इसे शास्त्रीय संगीत अवश्य सिखाइए।

कुमार में दो वर्ष की तालीम में ही विलक्षण शक्ति पैदा हो गई कि बड़े–बड़े गायकों के ग्रामोफोन रिकोर्डों की हू–ब–हू नकल करके गाने लगे।7 वर्ष की उम्र में एक मठ के गुरू ने उन्हें 'कुमार गन्धर्व' की उपाधि प्रदान की।

कुमार गन्धर्व का सर्व प्रथम गायन जलसा बेलगाँव में हुआ। इसके पश्चात् बम्बई के प्रोफेसर देवधर ने अपने संगीत विद्यालय में रख लिया। फरवरी 1936 में बम्बई में एक संगीत परिषद में कुमार की कला का सफल प्रदर्शन हुआ जिससे श्रोतागण मुग्ध हो गए और इनका नाम संगीतज्ञों तथा संगीत–कला प्रेमियों में प्रसिद्ध हो गया। 23 वर्ष की उम्र में आपका विवाह कराँची की एक संगीत निपुण महिला भानुमती से हुआ लेकिन उनका देहान्त हो गया और कुमार को दूसरा विवाह करना पड़ा। दुर्भाग्यवश कुमार कुछ समय बाद ही तपेदिक जैसी बीमारी के शिकार हो गये। पत्नी छाया की तरह साथ रहकर इनकी सेवा की जिसके परिणामस्वरूप कुमार स्वस्थ हो गए और देवास को ही इन्होंने अपना निवास बना लिया।

कुमार गन्धर्व केवल मधुर गायक ही नहीं अपितु एक प्रखर कल्पनाशील कलाकार थे आपने नवीन

रागों का निर्माण किया– मालवती, सहेली तोड़ी, अध्मिोहिनी, रिंदयारी, भावमत भैरव, लग्नगधार आदि विशेष उल्लेखनीय है। उनकी रचनाओं का संकलन उनके ग्रन्थ 'अनुपराग विलास' के नाम से प्रकाशित हुआ। कुमार ने गायन की एक नई शैली को जन्म दिया जिसमें लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत का मधुर मिश्रण किया। जिसे सुन श्रोता भावविभोर हो जाते हैं। 12 जनवरी 1992 को आपका देहावसान हुआ।

पंडित जसराज

जन्म – हिसार जिले के हरियाणा राज्य, 28 जनवरी 1930 ।

पिता का नाम– मोतीराम।

घराना – मेवाती।

संगीत गुरू – पं. मोतीराम (पिता), पं.मणिराम (भाई), महाराजा जयवंतसिंह (साणद दरबार)।

पण्डित जसराज आधुनिक काल के एक विख्यात गायक कलाकार हैं। उन्होंने अपने पिता पं. मोतीराम तथा भ्राता पं. मणिराम से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। जसराज जी ने भारत तथा अन्य देशों में अपनी कला का प्रदर्शन किया वर्तमान समय में वे आकाशवाणी व दूरदर्शन के एक जनप्रिय कलाकार हैं।

पं. जसराज का जन्म मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ इनके पिता मोतीराम मेवाती घराने से सम्बन्ध रखते है। चार वर्ष के आयु में इनके पिता की मृत्यु हो गई।

इन्होंने ख्याल को मेवाती घराने में प्रसिद्ध बना दिया। इन्होंने अपने शोध कार्य "हवेली संगीत" बाबा श्याम मनोहर गोस्वामी महाराज के निर्देशन में किया व इनके साथ मिलकर इन्होंने विभिन्न बदिशें बनाई प० जसराज जी ने जुगलबंदी पर एक साहित्य जसरंगी लिखा। पं. जसराज ने विविध रागों को विस्तृत में प्रस्तुत किया। इसमें गायन कली, अबीरी तोड़ी, धनश्री पुरबा, गुन्जा कान्हडा आदि।

पं. जसराज के बहुत विद्यार्थी थे जिसमें रतन मोहन शर्मा, संजीव अबयंकर और कला रामनाथ आदि। पं. जसराज अपने पिता की स्मृति में हर साल एक संगीत महोत्सब आयोजित करते है। जिसे पं. मोतीराम, पं. मनीराम संगीत महोत्सब के नाम से जाना जाता है। यह उत्सव समारोह हैदराबाद में आयोजित किया जाता है। जब पं. जसराज 36 वर्ष (2008) के थे तब उन्होंने स्वामी गंधर्व संगीत समारोह में प्रतिभागी के रूप में प्रस्तुत किया इनके एक शारंग देव पण्डित व एक पुत्री दुर्गा जसराज है। चित्रपट संगीत कम्पोजर जतिन–ललित पं. जसराज जी के भतीजे हैं।

पं. जसराज को संगीत क्षेत्र में विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हुए जिसमें पद्म विभूषण (शास्त्रीय कंठ संगीत) 2007 में, पद्म भूषण 1990 में, संगीत नाटक अकादमी 1987 में, संगीत कला रत्न, मास्टर दीनानाथ मंगेशकर अवार्ड, लता मंगेशकर पुरस्कार, महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार, स्वाती संगीत पुरस्कारम् 2008, ए.स. एन मेमोरियत नेशनल अवार्ड (श्री रामासेवा मडंली ट्रस्ट) 2009, संगीत नाटक अकादमी छात्रवृत्ति 2010, मारवाड़ संगीत रत्न अवार्ड और संगीत मतंग 2012 अवार्ड शामिल हैं। पं. जसराज संगीत की एक विलक्षण प्रतिभा के रूप में उभर कर आये।

मुख्य बिन्दु–

- मेवाड़ के महाराणा कुम्भा संगीत राज ग्रंथ के प्रणेता थे। संगीत राज ग्रन्थ को पंचम उपवेद भी कहा जाता है।
- भोजराज की पत्नि मेवाड़ की महारानी मीरा बाई की कृष्ण भक्ति दाम्पत्य भाव की थी।

- कुमार गन्धर्व ने लोक संगीत पर महत्वपूर्ण कार्य किया।
- जयपुर घराने के अल्लादिया खाँ साहब ने गायकी की नवीन शैलीगत विशेषताओं का समावेश कर अल्लादिया खाँ घराना बनाया।
- जसराज जी मेवाती घराने के मूर्घन्य गायक है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(1) मेवाड़ की उच्च कोटी की गायिका और सफल संगीतज्ञ थी–

(अ) किशोरी अमोलकर (ब) मीराँ बाई (स) माणिक वर्मा (द) मोघु बाई

(2) पं. जसराज किस घराने से सम्बन्धित हैं –

(अ) जयपुर (ब) आगरा (स) मेवाती (द) पटियाला

(3) अल्लादिया खां कौनसे घराने के माने हुए कलाकार रहे हैं –

(अ) जयपुर (ब) ग्वालियर (स) किराना (द) आगरा

(4) सिद्ध राम स्वामी किसके प्रथम संगीत गुरू थे।

(अ) भीमसेन जोशी (ब) केसर बाई (स) जसराज (द) कुमार गंधर्व

(5) 'संगीत राज' ग्रन्थ के रचयिता है।

(अ) पं. भातखण्डे (ब) प. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर (स) महाराणा कुम्भा (द) अहोबल

उत्तरमाला– (1) ब (2) स (3) अ (4) द (5) स

लघुउत्तर प्रश्न –

(1) महाराणा कुम्भा के संगीत गुरू कौन थे?

(2) कुमार गन्धर्व का मूल नाम क्या था?

(3) अल्लादिया खां सा के प्रमुख शिष्य गायक कलाकार कौन हुए हैं?

(4) पं. जसराज के संगीत गुरू का नाम लिखिये?

(5) मीराँ बाई के भजनों का प्रचार सर्वाधिक कहाँ हुआ?

निबन्धात्मक प्रश्न –

(1) मीरा बाई का सम्पूर्ण जीवन परिचय दीजिये।

(2) अल्लादिया खां की संगीत यात्रा का वर्णन करते हुए पूर्ण परिचय दीजिये।

(3) पं. जसराज को कौन–कौन सी उपाधि से सम्मानित किया गया? उनकी जीवनी भी लिखिये।

(4) कुमार गंधर्व की गायकी की मुख्य विशेषता लिखते हुए उनके जीवन का वर्णन करिये।

(5) महाराणा कुम्भा की जीवनी विस्तार से लिखिये।